॥ अथ ॥

श्रीमुनिभक्तिनो भाग बीजो.

तेने

यथामति रचीने

शा॰ मगनलाल नागरदासें

श्रावक खीमजी भीमसिंह माणक

मार्फत

निर्णयसागर प्रेसमां छपाव्यो छे.

संवत् १९५०. सन १८९४.

५५१८

॥ अथ ॥

॥ श्री मुनिभक्तिनो भाग बीजो प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सरस्वती भगवतीने नमुं,
चरणे करि परणाम ॥
समेत शिखर वर्णन करुं,
आपो अविचलवाण ॥ १ ॥
मुंबई सहेर सोहामणुं,
श्रावक वसे धनवंत ॥
गुणवंत दीसे घणा,
शीयलवंत जयवंत ॥ २ ॥
संवत उगणीश सुडतालवे,
आशोमास मझार ॥
शुकल पक्ष चोथने दिनें,
बुधवार सुखकार ॥ ३ ॥

पिस्তाळी आगम व्रत आदर्युं,
दोढमासी किरिया रे थाय ॥
एकासणुं दोढ मासनुं,
फरती टोळी जमाय ॥ ४ ॥
पिस्तालिश आगम जुवा जुवा,
ठविया मंरूपमांय ॥
पांच चोमुख पधराविया,
रचना कीधी त्यांय ॥ ५ ॥
समेत शिखर परवत ऊपर,
ठविया तीर्थंकर वीश ॥
मुहूर्त्त ज्ञलेरुं संघें किधुं,
नमो नमो ए जिन वीश ॥ ६ ॥
आशो वदि ठठने दिने,
कुंजस्थापना थाय ॥
शांति पुष्टिने कारणें,
वृरूस्नात्र जणाय ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ मुंबईमां श्रीसंघें रचना करेला समेतशिखरनुं वर्णन ॥

॥ ऋषजनी शोजा रे शी कहुं ॥ ए देशी ॥

मुंबई सहेर सोहामणुं,
प्रासाद चौद सोहाय रे ॥
विमान जेवी रे बांधणी,
नमो नमो ए जिनराय रे ॥ १ ॥
शिखरजीनी शोजा रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥
लालबागनुं महोटुं धाम छे,
सुंदर जूमि एकांत रे ॥
मुनिने चोमासुं राखीया,
मोहनलालजी महाराज रे ॥ शि० ॥ २ ॥
समेतशिखरनी रचना करी,
संघ मली एक चित्त रे ॥
कारीगर कशबी तेडावीया,
पटनो नमुनो तिहां दीध रे ॥ शि० ॥ ३ ॥

जेवो शिखरजीनो पहाड छे,
तेवो नमुनो इहां कीध रे ॥
ओलखाव्यो नहिं ओलखे,
रचना कीधी विविध रे ॥ शि० ॥ ४ ॥
जात्रा कीधी जेणें समेतशिखर,
तेने बोलावीने पूछ्युं रे ॥
आ डुंगरने त्यांनो डुंगर,
अंतर केतो कहेवाय रे ॥ शि० ॥ ५ ॥
उत्तर पाछो वालतां,
जाणियें पहाड इहां लाव्या रे ॥
झाड जंगल ने रे जीवडा,
देख्यां तेवां देखाय रे ॥ शि० ॥ ६ ॥
देवता डुंगर कारिमो कीधो,
काशमीर देश मोझार रे ॥
आगमसूत्रमांहे कह्युं,
सुणजो तेनो अधिकार रे ॥ शि० ॥ ७ ॥

जितारिराजा जे थया,
शुकराजानो ते जीव रे ॥
शेत्रुंजा महातम सांभली,
वैराग्यवंत थयुं चित्त रे ॥ शि० ॥ ८ ॥
अभिग्रह लीधो रे आकरो,
चार आहार कर्या त्याग रे ॥
शेत्रुंजा जातरा कर्या पछें,
पारणुं माराथी ते थाय रे ॥शि० ॥ ए ॥
फेरा दीधा जात्रा भणी,
कुटुंब परिवार थयो साथ रे ॥
प्रधान कोटवाल त्यां आविया,
फोज आवी तेणी वार रे ॥ शि०॥ १० ॥
कोई बे दिन भूख्यां रह्यां,
कोई चार दिन कोई आठ रे ॥
सर्वे जणें पारणुं कर्युं,
पण शेत्रुंजो न देखाय रे ॥ शि० ॥ ११ ॥

अरधे आव्या रे जेटले,
एकविश उपवास थाय रे ॥
दृढपरिणाम अति जाणीयो,
अधिष्ठायक आव्या तेणि वार रे ॥ शि० १२ ॥
जात्रा तमने प्रभातें थाशे,
एवुं सहामो रहि बोल्यो रे ॥
कारिमो डुंगर तिहां किधो,
धजाओ फरकती देखी रे ॥ शि० ॥ १३ ॥
शेत्रुंजो डुंगर देखीयो,
मूकाम कीधा तेण ठाम रे ॥
जात्रा करि पारणुं कर्युं,
जितारि राजा एवो जाणा रे ॥ शि० ॥ १४ ॥
दृष्टांत डुंगरनुं कीधुं,
आगलदेवतायें कीधो रे ॥
आ डुंगर तो मानवी कीधो,
भक्ति तणे उल्लास रे ॥ शि० ॥ १५ ॥

मधुवनमांहे धर्मशाला,
संघ उतरवाने काजें रे ॥
वाव्य कूवा ने रे कुंम छे,
जोवा जेवुं छे धाम रे ॥ शि० ॥ १६ ॥
देरासर तिहां नव छे,
श्यामला पासजी बीराजे रे ॥
वंदीने आगल चालिया,
शीती नदी तिहां आवी रे ॥ शि० ॥ १७ ॥
परवत आगल आवीया,
डुंगर मोतीडे वधाव्या रे ॥
उपर चडवाने आदर्युं,
हैडे हर्ष न माय रे ॥ शि० ॥ १८ ॥
अनंत मुनिवर सिद्धि वर्या,
तीरथ महोटुं कहेवाय रे ॥
उपर चाल्या रे आगलें,
हडमान वीरनुं देहरूं रे॥ शिं ॥ १९ ॥

गफायो गाम गाम आवे घणी,
जाडी तणो नहिं पार रे ॥
आगल चाल्या रे उपरें,
बीजी नदी देखाय रे ॥ शि० ॥ २० ॥
पाणीनिर्मल अति घणुं,
आगल बे नदी तिहां भेगी थाय रे ॥
अधिष्ठायक उपर रखवाल छे,
संभाल करे घणी सारी रे ॥ शि० ॥ २१ ॥
फागण मास जब आवशे,
मेलामां अति घणां थाय रे ॥
पाणीनो बगाड अति घणो,
तेथी उनालो टाली जाउ रे ॥ शि० ॥ २२ ॥
उघाडे पगे रे चालियें,
सात गाउ उंचो कहेवाय रे ॥
जडी बुट्टी तिहां अति घणी,
पुण्यवालानुं काम थाय रे ॥ शि० ॥ २३ ॥

वीश टुकें वीश देरडी,
सिद्धा तीर्थंकर वीश रे ॥
वर्त्तमान चोवीशीना,
पाय नमी नामुं शीश रे ॥ शि० ॥ २४ ॥
चार तीर्थंकर सिद्धि वस्या,
तेनो कहुं अधिकार रे ॥
वीर जगवान पावा पुरी,
मुगति गया एणे ठाम रे ॥ शि० ॥ २५ ॥
आदीश्वर अष्टापदें,
गिरनार नेमनाथ सिद्धा रे ॥
वासुपूज्य चंपापुरी,
ए थया जिन चोवीश रे ॥ शि० ॥ २६ ॥
चोवीश तीर्थंकर वंदियें,
त्रिकरण योगें मन थिर रे ॥
अल्पसंसारी ते जीव हुवे,
वंदनीय पोतें ते थाय रे ॥ शि० ॥ २७ ॥

वीश टुके जात्रा करी,
त्यां शामलाजीनुं चैत्य रे ॥
अष्टप्रकारी पूजा करी,
स्तुति कीधी मन थिर रे ॥ शि० ॥ २७ ॥
जात्रा करी नीचें उतस्या,
फरी चडवानुं मन थाय रे ॥
नावसहित जे जात्रा करे,
तेने नव तणुं दुःख जाय रे ॥ शि० ॥ २७ ॥
मुंबईना शिखरजीने जे वांदशे,
तेने जात्रातणुं फल थाय रे ॥
नावसहित नवि वांदजो,
अंतें शिवगति थाय रे ॥ शि० ॥ ३० ॥
सहेर पाटणनो रे वासियो,
नागर पानासुत गाय रे ॥
मगन कहे वंदना हजो,
एक सासमांहे सो वार रे ॥ शि० ॥ ३१ ॥ इति ॥

॥ श्री मुंबइमां बे श्रावकोयें दीक्षा लीधी ॥

॥ तेना उत्सवनी ढाल ॥

॥ हवे दीक्षा वरघोडो तमें सांभलो,
चडे मुंबइ सहेर मोझार रे ॥
मोहन वाजां वागीयां ॥ १ ॥
आखा सहेरमां वावटा बांधियां,
पताकानो नहिं पार रे ॥ मो० ॥ २ ॥
वाजां वाग्यां रे झवेरी बझार रे ॥ मो० ॥
वली मोतीयोनां तोरण बांधिया,
परवालां छे झाक झमाल रे ॥ मो० ॥ ३ ॥
सांबेलां घणां शणगारियां,
जाणे देवकुमर अवतार रे ॥ मो० ॥ ४ ॥
पहेर्या माणक मोतीने हीरला,
सोना तणो लागे छे भार रे ॥ मो० ॥ ५ ॥
साथें वाजित्र आखा सहेरनां,
महोटां वाजां विलातनां साथ रे ॥ मो० ॥ ६ ॥

वली घोडागाडी ने रथ पालखी,
साथें चार घोडानो छे रथ रे ॥ मो० ॥ ७ ॥
वली साजन मल्युं घणुं सामटुं,
साहेलीयोनो नहिं पार रे ॥ मो० ॥ ८ ॥
त्यां सांबेले सांबेले वाजां वागे,
गावे गीत मुनिनां रसाल रे ॥ मो० ॥ ९ ॥
जुवो निशाने झंको गायकवाडनो,
घोडा नाचे थइ थइ मोर रे ॥ मो० ॥ १० ॥
वली सरकारथी हुकम थीयो,
पोलीस लीधी छे साथ रे ॥ मो० ॥ ११ ॥
साथें अनेक जन शोभे घणा,
पग मूकवानी नहि जाग रे ॥ मो० ॥ १२ ॥
साथें जाचक भोजक ने भाट छे,
बोले बिरुदावलि मुनिराज रे ॥ मो० ॥ १३ ॥
आखा सहेरनां लोक जोवां मल्यां,
वली माले चड़ि चडि जोय रे ॥ मो० ॥ १ ॥

वली माले चडी सहु बोलतां,
धन्य दीक्षा लेवाने जाय रे ॥ मो० ॥ १५ ॥
श्रावक बेहु जण वर्ष पांत्रीशना,
संसार तजीने जाय रे ॥ मो० ॥ १६ ॥
हाथ जोडीने ले छे लूंछणां,
तारो धन्य मानव अवतार रे ॥ मो० ॥ १७ ॥
वरघोडो चड्यो मध्यबजारथी,
ऊवेरी आगेवान थाय रे ॥ मो० ॥ १८ ॥
जुवो दीक्षा लेवा उजमाल थया,
हरगोविंद सांकलचंद छे नाम रे ॥ मो० ॥ १९ ॥
एतो वडरे नगरनो वासीयो,
साथें किलिबाइ माता छे साथ रे ॥ मो० ॥ २० ॥
बांधव परिवार छे साथमां,
आंखे वरसे छे आंसुनी धार रे ॥ मो० ॥ २१ ॥
किलिबाइ माता बोले चार मास रहो,
तमें दीकरी परणावी व्रत लेजो रे ॥ मो० ॥ २२ ॥

पाछो उत्तर वाळे हरगोविंद भाई,
मारे क्षण एक लाखेणो जाय रे ॥ मो० ॥ २३ ॥
मारा आउखानी खबर नहिं मने,
मुने चार मास केम करि जाय रे ॥ मो० ॥ २४ ॥
माता आज्ञा आपी आशीष दीधी,
पुत्र चारित्र निर्मळुं पाळो रे ॥ मो० ॥ २५ ॥
गुरुनो विनय करजो कर जोडीने,
एवी आशीष दीधी माता भाइ रे ॥मो०॥ २६ ॥
हवे आदेश लइ पालखी बेठा,
श्रावक उपाडी चाल्या जाय रे ॥ मो० ॥ २७ ॥
बीजा दीक्षा लेवा उजमाल थया,
सांकलचंद तपसीजी नाम रे ॥ मो० ॥ २८ ॥
एतो अमदावादना वासिया,
बालब्रह्मचारी कहेवाय रे ॥ मो० ॥ २९ ॥
बालपणेथी तपस्या घणी करता,
छ अठाइ करे वरसो वरस रे ॥ मो० ॥ ३० ॥

तेणें कुटुंब पासें आज्ञा लीधी,
पछें पालखी बेग तेणी वार रे ॥ मो० ॥ ३१ ॥
श्रावक पालखी उपाडी चालीया,
श्रावक फूलडे वधावे वारं वार रे ॥ मो० ॥ ३२ ॥
तिहां बे पालखी साथें चाले,
ते तो रूपैया उछालता जाय रे ॥ मो० ॥ ३३ ॥
जाचक भोजकने दान दीधुं,
गरीब लोक सुखीया थाय रे ॥ मो० ॥ ३४ ॥
षड्दर्शन वाला प्रशंसा करे,
धनश्रावक दीक्षा लेवा जाय रे ॥ मो०॥ ३५ ॥
धन कीलिबाइ माता रतनजाया,
जेणें आखुं कुल अजवाल्युं रे ॥ मो० ॥ ३६ ॥
हवे वरघोडो भायखाले उतर्यो,
बेग मोहनगुरुजीनी सामे रे ॥ मो०॥ ३७ ॥
नाण मंडावी ने किरिया करी,
पछी वेश उतारी दीधो भाई रें ॥ मो० ॥ ३८ ॥

सांकलचंद भाईयें वेश उतारियो,
दीधो सहामिभाईने हाथ रे ॥ मो० ॥ ३९ ॥
पछे लोच करी चारित्र दीधुं,
नाम ठवियुं छे हेममुनिराज रे ॥ मो० ॥ ४० ॥
बीजुं नाम ठव्युं सुमति मुनि,
संघ वंदना कीधी अपार रे ॥ मो० ॥ ४१ ॥
गुरु मोहनलालजीना शिष्य थया,
चेला आठ भेगा थाय रे ॥ मो०॥ ४२ ॥
पछे थोडा दिवसमां विहार कर्यो,
सधाव्या सुरतनी पास रे ॥ मो० ॥ ४३ ॥
सुणो संवत ओगणीश अडतालुवो,
मृग मास पंचमी रविवार रे ॥ मो० ॥ ४४ ॥
दीक्षानो दिवस तमो जाणजो,
तमो वंदजो वारं वार रे ॥ मो० ॥ ४५ ॥
एतो सहेर पाटणनो वासियो,
मग्न मुनिवरना गुण गाय रे ॥मो०॥ ४६ ॥ इति ।

मुनिने वंदना होजो माहरी,
एकसहस्त्रने आठ वार रे ॥मो० ॥ ४७ ॥ इति ॥

॥ अथ संघभक्तिना उत्सवनी गरबी ॥

॥ मुंबई आव्या रे वहाला,
लालच लागी मुनि लटकाला ॥
वंदवा जईशुं रे वहेला,
देशना सुणीयें सहुथी रे पहेला ॥ मुं० ॥ १ ॥
देशना जाणीयें अमृतवाणी,
प्रतिबोध पाम्याछे रे प्राणी ॥
नाण मंमावीने व्रत घणां लीधां,
कारज नविनां सरवे सीधां ॥ मुं० ॥ २ ॥
पहेलुं चोथुं ने बार व्रत लीधां,
पंचांगी लावो रे लीधो ॥
पूजा उत्सवनो घणो ठाठ ॥
धन खरचायुं रे एक लाख ॥ मुं० ॥ ३ ॥
उत्सवमां अमें गावा रे जईशुं,

फरती फुदडीरे लेइशुं ॥
जिनजीने चरणे वारणां लइशुं,
मुनिने वंदवा रे जईशुं ॥ मुं० ॥ ४ ॥
सहम्मी वत्सल दिनप्रत्यें थावे,
नाटक नवनवां रे गावे ॥
परभावना नित्य फरती आपे,
दुःखडां भव भवनां कापे ॥ मुं० ॥ ५ ॥
रातिजगो लालबागमां रे थावे,
वाजां विलातनां रे लावे ॥
साहेलीयो देव गुरु गुण गावे,
लली लली पाय लागी सुख पावे ॥ मुं० ॥ ६ ॥
षट दर्शनवाला साचुं बोले,
नहिं वली कोइ जिनधर्मने तोले ॥
चार आहार तजी उपवास करता,
एवुं जाणीने रे नमता ॥ मुं० ॥ ७ ॥
मास पास ने रे आठ पांच कीधा,

गुरु म्हारा लाभ घणा ते लीधा ॥
संवत्सरी शक्ति दान दीधां,
नरभव जन्म सफल तो कीधा ॥ मुं० ॥ ८ ॥
मोहनलालजी मुंबइ चोमासुं,
संघने आग्रहें कीधुं खासुं ॥
संघ सरवेने धर्मदान दीधुं,
मिथ्यात्व उंचुं रे कीधुं ॥ मुं० ॥ ९ ॥
संवत् उगणीश सुडतालवा वरसें,
श्रावण बीजने उत्तम दिवसें ॥
मगन कहे भावथी जे गावे,
पाप सघलां ते दूर पलावे ॥ मुं० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ गरबानी देशीनुं स्तवन ॥

॥ आजनो लाहो लीजीयें रे,
काल केणें दीठुं छे ॥
केणें दीठुं छे ज्ञानी दीठुं छे,
धर्मकरणी रूडी कीजीयें रे ॥ का० ॥ १ ॥

माता पिता बांधव सुत बनिता,
सुपनाको राज केम लीजियें रे ॥ का० ॥ २ ॥
हथेली अंजली सरिखुं रे आउखुं,
क्षणनो नरोंसो नवि कीजियें रे ॥ का० ॥ ३ ॥
मोहराजाना राजमां रे वसियें,
नरकनिगोदमां फसियें रे ॥ का० ॥ ४ ॥
पांच इंड्रियो वश करिने राखीयें,
चार प्रकारें धर्म कीजियें रे ॥ का० ॥ ५ ॥
सात क्षेत्रमां धन खरचीजें,
शिवपुरमां जई वसियें रे ॥ का० ॥ ६ ॥
सिद्धाचल पंचतीर्थें जईयें,
जात्रा करी पाप हरियें रे ॥ का० ॥ ७ ॥
देव गुरुनी नित्य नक्ति रे करियें,
नवसागरथी तरियें रे ॥ का० ॥ ८ ॥
पडिक्कमणुं बे टंकनुं रे करियें,
शिवरमणीने वरियें रे ॥ का० ॥ ए ॥

आश्रव सर्वे दूरज करियें,
संवरने आदरियें रे ॥ का० ॥ १० ॥
ज्ञानी माहाराजनी शिखामण मानियें,
चोराशी फेरो टालीयें रे ॥ का० ॥ ११ ॥
मगन कहे सुणजो नर नारी,
धर्मकरणी नवि चूकीयें रे ॥ का० ॥ १२ ॥
॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन पहेलुं ॥
तीरथ अष्टापद नित्य नमियें ॥ ए देशी ॥
तीर्थ शत्रुंजय गिरि नित्य नमियें ॥
सकल तीरथनो राया रे ॥
कांकरे कांकरे श्रीसिद्धक्षेत्रें,
सिद्धा अनंत मुनिराया रे ॥ ती० ॥ १ ॥
चौद क्षेत्रमां तीर्थ न एहवुं,
नहिं कोई शेत्रुंजा तोले रे ॥
परायें शाश्वतो गिरिवर कहियें,
अनंता तीर्थंकर बोले रे ॥ ती० ॥ २ ॥

कार्ति पूनमे दश कोडी सिद्धा,
द्रविड ने वारिखिल्लोरे ॥
गौ नारी बालक मुनिहत्या,
पाप गयुं ततखीणो रे ॥ ती० ॥ ३ ॥
चैत्रीपूनमें पुंडरिक गणधर,
पांच कोडि मुनि सिद्धा रे ॥
त्यांथी प्रगटयुं पुंडरगिरि नामो,
नित्य नित्य करुं परणामो रे ॥ ती० ॥ ४ ॥
खटमासी जेणें ध्यानज धरियुं,
शुक राजाने राज्य मलियुं रे ॥
शत्रु हणावी शत्रुंजा नाम दीधो,
नरभव लाहो लीधो रे ॥ ती० ॥ ५ ॥
चंद्रशेखर निज भगिनीनो भोगी,
अघोर पाप जेणें कीधुं रे ॥
शेत्रुंजा तीरथनी सेवा करतां,
मोक्षनगर जेणें लीधुं रे ॥ती० ॥ ६ ॥

पूर्व नवाणुं नाथजी इहां आव्या,
राणतले समोसरिया रे ॥
कंचनमय प्रासाद कराव्यां,
रयणमय बिंब भरतें भराव्यां रे ॥ ती० ॥ ७ ॥
तीर्थराज नमो जापज जपियें,
आदीश्वरजी ने नमियें रे ॥
मगन कहे भवभय दुःख वारो,
भवसायरथी तारो रे ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन बीजुं ॥

भवि ! तुमें नित्य ए गिरि सेवो,
चौद क्षेत्रमां, हांरे त्रण भुवनमां तीर्थ न एवो॥भ०
कहरी पाली सिद्धाचल जइयें,
जात्रा तिहां नवाणु करियें ॥
लाख नवकार एक चित्त गणियें,
विधिपूर्वक हांरे विधि पूर्वक जातरा करियें॥भ०॥१
चोमासुं पालीताणे रहियें,

पूजा त्रण्य कालनी करियें ॥
तलाटी जइ ध्यानज धरियें,
मुनिराजने दान ते दइयें ॥ ज० ॥ २ ॥
पडिक्कमणुं बे टंकनुं कीजें,
भूमिपर संथारो लीजें ॥
मुनिराजनी देशना सुणीजें,
व्रत पच्चरकाण नित्य नित्य कीजें ॥ ज० ॥ ३ ॥
एम चोमासुं जवि कीजें,
कातीपूनमें डुंगर चडीजें,
आदिजिनवरने जेटीजें ॥
चोरवे चित्तें पूजा कीजें ॥ ज० ॥ ४ ॥
नवे टुकनां दरिसन कीजें,
घेटी पायग नमीने आवीजें ॥
बार गाउनो डुंगर फरसीजें,
षट गाउनी प्रदक्षिणा दीजें ॥ ज० ॥५॥
चंदनतलावडी काउस्सग्ग कीजें,

भाडवाना डुंगरने नमीजें,
रसोडानी पायग वंदीजें,
पूर्व संचित कर्म हरीजें ॥ भ० ॥ ६ ॥
शेत्रुंजी नदी नाहीने चडीजें,
वच्चें पगलां आवे ते पूजीजें ॥
देवकीजीना सुत वंदीजें,
आदिजिनवरने भेटीजें ॥ भ० ॥ ७ ॥
सूरजकुंडना जलथी नाहीजें,
त्रिकरण योगें पूजा करीजें॥
रायणतले पगलां पूजीजें,
पुंडरिक गणधरने नमीजें ॥ भ० ॥ ८ ॥
एम जात्रा भविजन करियें,
गर्भावासनुं दुःख परहरियें ॥
शिवरमणीराणीने रे वरियें,
कहे मगन सुणो भव तरियें ॥ भ० ॥ ९ ॥

॥अथ सिद्धाचलजीनुं स्तवन त्रीजुं॥देशी फागनी॥

॥ हांरे दरिसन कियो आज शेत्रुंजा गढको॥द०॥
शेत्रुंजा गढपर ऋषभ जिनेश्वर,
पूजीने पाप कट्यो भवको ॥ द० ॥ १ ॥
कांकरे कांकरे श्रीसिद्धक्षेत्रें,
साधु अनंता शिव वरिया ॥ द० ॥ २ ॥
चौद क्षेत्रमां तीर्थ न एहवो,
श्रीसीमंधर स्वामी भणीयो ॥ द० ॥ ३ ॥
पूर्वनवाणुं नाथजी इहां आया,
राणतले प्रभु समोसरिया ॥ द० ॥ ४ ॥
कातीपूनम जात्रा रे करियें,
चारे हत्यानुं पाप दूर हरियें ॥ द० ॥ ५ ॥
चैत्री पूनम जात्रा करियें,
तप जप ध्यान हृदे धरियें ॥ द०॥ ६ ॥
भाव सहित भक्ति प्रभु करियें,
पंच भवें शिवसुख वरियें ॥ द० ॥ ७ ॥

चंद्रशेखर निजभगिनीनो भोगी,
तीर्थ सेव्याथी शिवसुख वरियो ॥ द० ॥ ८ ॥
षट गाउनी परदक्षणा करियें,
चार गतिनुं महोटुं दुःख हरियें ॥ द० ॥ ए
कर जोडी मगन गुण गाइयो,
तारो प्रभु शरणे आइयो ॥ द० ॥ १० ॥

अथ

॥ सिद्धाचलजीनुं स्तवन चोथुं ॥

प्रथम तीर्थंकर वंदियें रे,
शेत्रुंजा तीरथ बीराजे लाल ॥
सकल तीरथनो ए राजियो रे,
नाभिरायासुत छाजे लाल ॥ प्र० ॥ १ ॥
जन्म्या चैत्रवदि अष्टमी रे,
दीक्षानो दिन ते जाणो लाल ॥
सुर नर सेवा कोडी करे रे,
रुषभ लांछन सारो लाल ॥ प्रं० ॥ २ ॥

चौद क्षेतरमां तीरथ नहिं रे,
नहिं कोई शेत्रुंजा तोले लाल ॥
श्रीसीमंधरें भांखीयुं रे,
सुरपति आगें एम बोले लाल ॥ प्र० ॥ ३ ॥
मुकुट कुंडल शिर शोभतां रे,
कोटें नवसरो हारो लाल ॥
बांहे बाजुबंध बहेरखा रे,
वंदूं वारम वारो लाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥
भाव सहित भगति करे रे,
करमनी कोति तिहां जावे लाल ॥
सुरलोकें जइ अवतरे रे,
अंतें शिवगति थावे लाल ॥ प्र० ॥ ५ ॥
चंद्रशेखर भगिनीनो भोगी रे,
अघोर पाप जेणें कीधां लाल ॥
तीरथ सेव्याथी शिवसुख वरे रे,
मोक्षनगर जेणें लीधां लाल ॥ प्र०॥ ६ ॥

साधु अनंता सिद्धि वस्या रे,
मोक्षें गया केई कोडी लाल ॥
अमने आशा महोटी घणी रे,
मगन कहे कर जोडी लाल ॥ प्र० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

अनारज जेवुं क्षेत्र आ,
निर्ग्रंथ मुनि न देखाय ॥
श्रीमोहनमुनि आविया,
धर्मकरणी रूडी थाय ॥ १ ॥
मुनिने आहार वहोराविया,
वैयावच्च कीधुं अति सार ॥
भरत बाहु बेहु भाइ थया,
पाम्या शिव निरधार ॥ २ ॥
तेमाटें भक्ति करो,
रात दिवस रहो पास ॥
भरत बाहु परें पामशो,

क्षेशो लील विलास ॥ ३ ॥
मुनि विना केवल नहिं,
केवल विना न शिवसुख ॥
भावसंयमथी पामीयें,
अविचल मुक्तिनुं सुख ॥ ४ ॥
जरमर वरसे मेहुला,
घटा चडी घमघोर ॥
त्यां मुनिवर काउस्सग्ग रह्या,
वंदूं बे कर जोड ॥ ५ ॥
मुंबईमां मोतिशा हुवा,
करुणावंत दयाल ॥
देवलोक जई अवतर्या,
संघनी कीधी सार ॥ ६ ॥
अमदावाद हठीसिंह हुवा,
पुण्यतणो नहिं पार ॥
चिहुंदीशें जस विस्तर्यो,

धन्य श्रावक अवतार ॥ ७ ॥
तेवा प्राज्ञाविकने नमी,
अनुमोदन करुं सार ॥
कर जोडी मगन कहे,
सुख आपो शिव सार ॥ ८ ॥

॥ प्रास्ताविक श्लोको ॥

जलस्नानात् मलत्यागो,शीलस्नानात् सदाशुचिः तपःस्नानात् व्याधिनाशो,ज्ञानस्नानात् परंपदं॥१ ॥ सत्यशौचं तपःशौचं, शौचमिंद्रियनिग्रहः ॥ सर्वभूतदयाशौचं, जलशौचं तु पंचमं ॥२ ॥ क्षमा तुल्यं तपोनास्ति,न संतोषात् परं सुखं ॥नहि तृष्णा परोव्याधि, नहि धर्मोदयोपरि ॥ ३ ॥ दारिद्र्य मुद्यमान्नास्ति, जपतोनास्ति पातकम् ॥ मौनेन कलहोनास्ति, नास्ति जागरुके भयम् ॥४॥ दुर्लभं मानुषं जन्म, हा ! मुदा हारितं मया ॥ पापेन म नसा ध्यातं,रामाऽरामधनं गृहम् ॥५॥ गाथा ॥ भ

एकणं देवदव्वस्स, परत्थीगमणं तथा ॥ सत्तमं नरकं जंति, सत्तवाराउ गोयमा ! ॥६॥ द्यूतं च मांसं सुरा च वेश्या, पापर्धि चौर्यं परदारसेवा ॥ एतैश्च सप्त व्यसनैश्च लोको, घोरातिघोरं नरकं प्रयांति ॥७॥ अत्यंतकोपः कटुरा च वाणी, दरिद्रता बंधुजनेषु वैरम् ॥ नीचप्रसंगः परदारसेवा, चिन्हानि देहे नरकस्थितानाम् ॥८॥ अक्रोधवैराग्यजितेंद्रियत्वं, क्षमा दया सर्वजनेषु प्रीतिः॥ निर्लोभत्यागौ भयशोकनाशा ज्ञान, प्रदानां दश लक्षणानि ॥९॥

॥ विनति ॥

सर्व स्वधर्मि सुजनोने हुं विनय पूर्वकविनति करुंछुं के, आ मुनिभक्तिनो बीजो भाग जेमें रच्योछे तेमां जेकोइ मारी अल्पबुद्धिथी अशुद्ध रहि गयुं हशे, तेनेकृपाकरी सुधारीवांचशो. एज महारीप्रार्थना.

मगनलाल नागरदास.

रहेवासी पाटणना हाल मुंबईमां.

